रिश्ता नाता जोड़ने की फज़ीलत

मुहम्मद अज़हर मदनी

हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो रिवायत करते हैं कि खसअम कबीले के एक व्यक्ति का बयान है कि मैं अपने कुछ साथियों के साथ पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुआ और मैंने कहा, क्या आप का दावा है कि आप अल्लाह के रसूल (पैगम्बर) हैं? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जवाब दिया हाँ! मैंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! कौन सा कर्म अल्लाह को सबसे ज़्यादा पसन्द है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह पर ईमान। मैंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! फिर कौन सा कर्म? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रिश्ता नाता जोड़ना। मैंने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! फिर कौन सा कर्म? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः नेकी का हुकम देना और बुराई से रोकना।

अल्लाह तआला ने दुनिया व आखिरत में कामयाबी के लिये जो सिद्धांत और नियम बनाया है उसका नाम इस्लाम है और हम इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि दुनिया व आखिरत (मरने के बाद वाले जीवन) में कामयाब होने और रब की खुशी हासिल करने के लिये दो अहम और बुनियादी चीज़ों का वाहक होना ज़रूरी है। एक अल्लाह की इबादत जो हमारे पैदा किया जाने का मकसद है और दूसरा नैतिकता। नैतिकता में रिश्ता नाता जोड़ने का स्थान सबसे ज़्यादा ऊंचा है और इसमें भी मां बाप के साथ अच्छा बर्ताव करना, इसके बाद बन्दों के अधिकारों में रिश्तेदारों का स्थान सबसे ज़्यादा ऊंचा है। इसी लिये कुरआन और हदीस में रिश्ते नातेदारों के साथ रिश्ता जोड़े रखने और उनके साथ अच्छा व्यवहार करने की बड़ी ताकीद आई है और बड़ा पुण्य का काम करार दिया गया है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया ''और रिश्तेदारों और मिस्कीनों और मुसाफिरों का हक़ अदा करते रहो'' (सूरे बनी इस्राईल-२६)

दूसरी जगह कुरआन में फरमायाः ''और अल्लाह ने जिन चीज़ों के जोड़ने का हुक्म दिया है वह उसे जोड़ते हैं''

हदीसों में रिश्ता नाता जोड़ने वालों को शुभसूचना सुनाई गई है। एक अवसर पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि दुआ के सिवा तकदीर को कोई चीज़ नहीं टाल सकती और उमर में नेकी के सिवा कोई चीज़ बढ़ोतरी नहीं कर सकती। यहां नेकी का तात्पर्य रिश्ता नाता जोड़ना है और इससे बड़ी बात क्या होगी कि रिश्ता नाता जोड़ना अल्लाह के रहमत को वाजिब (अनिवार्य) कर देती है।

आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रहिम (रिश्ता नाता) अर्श से लटका हुआ है कहता है कि जो मुझे मिलाए गा अल्लाह उसको अपनी रहमत से मिलाएगा और जो मुझे काटेगा अल्लाह उसको अपनी रहमत से काटेगा अर्थात अपनी रहमत से वंचित कर देगा।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिस शख्स को यह बात पसन्द हो कि उसकी रोज़ी में बढ़ोतरी हो और उसकी उमर लम्बी हो तो यह रिश्ता नाता जोड़े रखे। एक और हदीस में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम अपना नसब (परिवारिक वंश) को मालूम करो ताकि अपने रिश्तेदारों के साथ रिश्ता नाता जोड़ सको। रिश्तेदारों के साथ रिश्ता नाते जोड़े रखने के बड़े फायदे हैं इससे घर वालों के बीच मुहब्बत होती है। माल में बढ़ोतरी होती है। रिश्ता नाता जोड़ना एक मुसलमान और इन्सान की विशिष्ट पहचान है जो उसे लोगों में प्रमुख बनाती है यही वजह है कि सहाबा किराम रज़ियल्लाहो अन्हुम के यहां रिश्ता नाता जोड़ने का बड़ा एहसास था। अल्लाह तआला से दुआ है कि हम तमाम लोगों को सहीह अर्थों में एक दूसरे के अधिकारों को समझने और इस पर अमल करने की क्षमता प्रदान करे।

मासिक

इसलाहे समाज

सितंबर 2021 वर्ष 32 अंक 7

सफ़रूल मुज़फ्फर 1443 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

एहसानुल् ह़क़

❑	वार्षिक राशि	100 रुपये
❑	प्रति कापी	10 रुपये
❑	टोटल पेज	28

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613
RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से भारत आफसेट **2035** क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल **4116**, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक़

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1.	रिश्ता नाता जोड़ने की फ़ज़ीलत	2
2.	मेरा पैग़ामे मुहब्बत है जहाँ तक पहुंचे	4
3.	वक़्त की क़दर न करने का परिणाम	6
4.	यह दुआ का वक़्त है	7
5.	उपासना और अल्लाह से भय	10
6.	अपील	12
7.	नैतिक प्रशिक्षण	13
8.	मर्कज़ी जमीअत की प्रेस रिलीज़	16
9.	शिक्षा पर ध्यान देने की ज़रूरत	17
10.	दहेज लेने और देने के हीले व बहाने	20
11.	कुरआन का चमत्कार	23
12.	जमाअती खबर	26
13.	अपील	27
14.	अहले हदीस मंज़िल (विज्ञापन)	28

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

मेरा पैग़ामे मुहब्बत है जहाँ तक पहुंचे

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

इस वक़्त पूरे संसार के इन्सान विशेष रूप से मुसलमान नये-नये फितनों और बीमारियों के शिकार होते जा रहे हैं एक फितना कई फितनों की भूमिका होता है अगर इस का समय पर उपाय और रोकथाम न हो सके तो इसी तरह एक रोग असंख्य रोगां का स्रोत बन जाता है और नासूर का रूप धारण कर लेता है। पहले यह रोग मानव-शरीर को ही होते थे अब वह इन्सान की आत्मा को भी चाट खाने और खोखला बनाने का माध यम बन रहे हैं ऐसा नहीं कि पहले यह शारीरिक रोग आध्यात्मिक रोग का कारण नहीं बनते थे। शरीर से आत्मा की तरफ संकृमित होना इस रोग का प्राचीन युग से प्रचलन रहा है मगर आधुनिक युग में यह महामारी का काम कर रहा है। अरबी भाषा की प्रसिद्ध कहावत है जो हदीस हर्गिज नहीं है मगर अनुभव की कसौटी पर बिल्कुल सही उतरती है, ''कादल फक्रो ऐं यकूना कुफरन'' अर्थात आशंका है कि फक्र व फाका और तंगदस्ती कुफ्र का रूप धारण कर ले।

दूर क्यों जाते हो! ज़रा क़रीब की मिसाल तुम्हारे सामने है और निजी अनुभव गवाह हैं हमारी इस बात पर कि यह कोरोना का घातक मर्ज़ जिस ने शरीर एवं प्राण को खाने के साथ साथ दीन व ईमान को भी खा लिया है जिसकी लपेट में असंख्य लोग, कौम और कबीले आए हैं। खालिस दीन व धर्म के मानने वालों के लिए भी कई पहलुओं से यह मर्ज़ फितना और वबाल बना हुआ है और इस की मार से तो संभवतः कोई मालदार, गरीब, मुसाफिर व निवासी, देश व समुदाय और क्षेत्र बचा नहीं है न गरीब देश इसके नुक़सानात से बच सके न मालदार और सुपर पावर देश इसके निर्दयी वार और यलग़ार से सुरक्षित रह सके। हम गरीबों की गिंती तो किसी अर्थ में कहीं से है ही नहीं मगर जो ईमान लाए सब्र किया और मज़बूती से जमे रहे।

कहने का अर्थ यह है कि यह एक रोग हार्दिक और शारीरिक रोग और दीन व ईमान के लिये रोग बन सकता है तो वह फितने जो खालिस आर्थिक हों और ईमान व इस्लाम को ही भस्म व खत्म करने के लिये बरपा किये गये हों उसके प्रभाव कितने स्थिर प्रभावी और घातक होंगे। इसलिये अगर इसके निवारण एवं उपाय का तुरन्त और उचित उपचार न हुआ और इसकी रोक थाम और उपाय के लिये दीन व ईमान और देश व समुदाय के शुभचिंतक हज़रात फिक्रमन्दी के साथ व्यवहारिक इकदामात नहीं करें गे तो इस महामारी से कोई अच्छा और बुरा घराना और अच्छा बुरा शख्स बच नहीं पायेगा। आज स्थिति यह है कि बहुत से खुशी के अवसर फितनों की वजह से गम के हालात पैदा कर देते हैं और कुछ लोगों के लिये बहुत से गम व रंज की घटनाएं जश्न व हर्ष के सामान उपलब्ध करा देते हैं वह स्थानीय फितने हों या अन्तर्राष्ट्रीय हों, दाखिली फितने हों या खारिजी सब का यही हाल है। फितनों के ज़माने में क़ौम को सबसे ज़्यादा संगठित व एकजुट और होशियार व जागरूक रहने की ज़रूरत होती है। सर उठाने और फैलने से पहले ही उनका उन्मूलन आवश्यक होता है और अगर वह अपने कबीला, अपने देश और समुदाय से सबन्ध न भी रखते हों तो आज के मीडियाई दौर में भी वह साधारण संकट,

हरजाई और असीमित बनते चले जाएंगे इसलिए अपने आस पास खास तौर से नौजवान और नई नस्ल को इन से खबरदार और सावधान करके इन फितनों का शिकार होने और आजमाइश में पड़ने से बचाना हम सब की ज़िम्मेदारी है वर्ना किसी एक के प्रभावित या संलिप्त होने से पूरे देश व समुदाय और जमाअत की जान के लाले पड़ने और आजमाइश में लिप्त होने के परिणाम से दोचार होना पड़े गा। किसी फारसी कवि ने कहा है। पूरी कौम में से एक भी आदमी नादानी करता है तो पूरी कौम की इज्ज़त व सम्मान खत्म हो जाता है।

कोरोना के घातक रोग और इससे जनम लेने वाले फितनों के बारे में बहुत कुछ कहा जा चुका है। इश्क व मुहब्बत और मीडियाई और सोशल मीडिया और अन्य संसाधनों के परिणाम स्वरूप जो दीनी पकड़ कमज़ोर हो चुकी है और नैतिक दिवालियापन की वजह से जो फँसाव और नारी को शिकार करने वाली शादियों का भी सिलसिला है और इसके दीनी, नैतिक और समाजी जितने प्रकार के फितने और मुश्किलात जनम ले रहे हैं वह स्वयं बड़ी घटना है। अगर इसकी रोकथाम और इससे जुड़े फितनों और खतरात से बचने के लिये दूरदर्शिता, गंभीरता और रणनीति और बड़े मनोबल से काम नहीं लिया गया तो इससे अधिक भयानक स्थिति से दोचार होना पड़ेगा। दूसरी तरफ से तरह तरह के आन्दोलन, जमाआत और जत्थे भी बड़े भड़कीले अन्दाज़ में और पूरे भावताव के साथ संवेदनशील और अहम मैदानों में कूद पड़े हैं जिनका स्वभाव दीनी और रूहानी लगता है मगर वह कभी कभार प्राकृतिक दीन और हालात व स्थान और देश व समुदाय के स्वभाव से मेल नहीं खाते। मगर हमारे लोग जोश में होश खो बैठे हैं और इसे देश व समुदाय के लिये लाभकारी समझते हैं यह बड़ी ट्रेजडी है। इस्लाम जगत के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक नामों से कई आन्दोलन और गरोह उठे मगर इसकी वजह से अवाम को तो छोड़िये असाधारण लोग बल्कि बहुत से देशों में फितनों का दरवाज़ा खोल दिया। हालिया दिनों पड़ोस के देश में राजनीतिक परिवर्तन आया। नई सत्ता पर नये क़ब्ज़ा करने वाले तालिबान के बारे में अटकल बाजी शुरू हुई, टिप्पणी के पिटारे खुले, समर्थन व खण्डन का बाज़ार गर्म न था मगर मीडिया ने एक आध बयानों पर बहस व तकरार की गर्म बाज़ारी शुरू कर दी। विभिन्न संस्थाएं हरकत में आ गईं और मामूली टुवीट पर फितनों का दरवाज़ा खुलने लगा ऐसे सियासी हालात और मामलात में हमारी खामूशी और चुप रहना उचित और अर्थवान भी बताया जा सकता है। बोलने के लिये अगर जुबान तरस रही हो या मजबूर महज़ बन रहे हों तो साफ-साफ यह कह देना चाहिए कि हम को बाहर जाने की बिल्कुल ज़रूरत नहीं। हमारा देश एक ज़िम्मेदार देश है, हम एक ज़िम्मेदार और बुद्धिमान नागरिक हैं। हमारे देश की जो नीति और फैसला जिसके बारे में हो और जो हो वही हमारा दृष्टिकोण और नीति होनी चाहिए हमारे लिये हमारे देश और समुदाय के लिये जो हितकारी हो हम उसी को अपनाएंगे। हमारी अलग से कोई राय नहीं कि इन्सान भी तरह-तरह के हैं और राय भी भाँत-भाँत की हैं। इसलिये हम साफ-साफ नौजवानों, साधारण और असाधारण से कह देना चाहते हैं कि वह इन मामलात में कदापि न पड़ें और बता दें कि

तुझ को पराई क्या पड़ी अपनी नबेड़ तू

अल्लाह तआला देश व समुदाय और नौजवानों को हर तरह के फितनों से सुरक्षित रखे। आमीन

उनका जो फर्ज़ है वह अहले सियासत जानें

मेरा पैग़ामे मुहब्बत है जहाँ तक पहुंचे

वक़्त की क़दर न करने का परिणाम

नौशाद अहमद

कामयाबी और नाकामी अर्थात सफलता और असफलता इन्सान के जीवन का हिस्सा है, हर इन्सान की रूचि अलग-अलग होती है, मेहनत व लगन से कामयाबी मिलती है, कोई व्यापार में रूचि रखता है तो कोई सर्विस में रूचि रखता है, प्रयास के अनुसार इन्सान को कामयाबी मिलती है, अगर मकसद नेक हो तो देर सवेर उसका फल और परिणाम ज़रूर मिलता है, शर्त यह है कि धैर्य बाक़ी रहे, महज़ कुछ दिनों की नाकमी से निराश नहीं होना चाहिए, प्रयत्न का सिलसिला जारी रहना चाहिए, संकल्प मजबूत होना चाहिए, और लक्ष्य सामने हो तो कामयाबी के रास्ते निकलते चले जाते हैं।

दुनिया का कोई भी काम बिना योजना और पलानिंग से कामयाब नहीं होता। होता क्या है कि हम कोई भी काम सोच कर ऐसे ही उसको करना शुरू कर देते हैं लेकिन करने से पहले उसके अंजाम और परिणाम पर गौर नहीं करते, मकसद से गाफिल होने के कारण वह नतीजा सामने नहीं आता जो किसी काम का असल लक्ष्य होता है।

आम तौर से हम लोग अपनी नाकामी का ठेकरा दूसरों के सर पर फोड़ देते हैं, और दलील देकर अपने आप को तसल्ली दे देते हैं, कि फलां की वजह से ऐसा हुआ वैसा हुआ जब कि होना तो यह चाहिए कि उन कारणों का आकलन करें कि हमारे नाकाम होने की वजह क्या है, मकसद की प्राप्ति में विफल क्यों हुए। जितना वक़्त हम लोग नाकामी के बहाने ढूढ़ने में लगा देते हैं अगर यही वक़्त अपनी नाकामी का आत्म निरीक्षण करने में लगा दें तो कामयाबी का रास्ता प्रशस्त हो जाता है लेकिन हमारा ज्यादा तर वक़्त दूसरों की नाकामी को उजागर करने में सर्फ हो जाता है।

किसी परिवार, संगठन की सफलता और विकास की नेव सिस्टम की पाबन्दी पर टिकी हुई होती है, अगर सिस्टम और वक़्त की पाबन्दी के संदर्भ में बात की जाए तो हम लोग लगभग शून्य नज़र आते हैं, वक़्त पर नमाज़ पढ़ने और उसकी पाबन्दी करने की मिसाल हमारे सामने है, इबादत करने में कोई पूंजी नहीं लगती है, लेकिन इसमें भी फिसड्डी नज़र आते हैं, वक़्त को व्यर्थ कामों में बर्बाद कर देते हैं, टीवी सीरियल और अन्य दूसरे व्यर्थ प्रोग्रामों में अपने कीमती वक़्त को रात-रात भर जाग कर बर्बाद कर, देते हैं जब कि अल्लाह तआला ने कुरआन में वक़्त की कसम खाई है, वक़्त की क़सम खाने का मकसद इन्सान को वक़्त की कीमत का एहसास दिलाना है। कुरआन की सूरे अस्र में वक़्त की अहमियत को भलीभाँति बताया गया है। वक़्त की पाबन्दी और इबादतों की पाबन्दी, यह दो महत्वपूर्ण बिन्दु हैं जिनसे हम लोग गफलत में पड़े हुए हैं, हमें इस गफलत से निकलना चाहिये और अपने वक़्त का सहीह स्तेमाल करते हुए अपने जीवन का का मकसद समझना चाहिए दूसरे लोग वक़्त की पाबन्दी से कहां से कहां पहुंच गये हर मैदान में आगे हो गये और हम वक़्त का सहीह स्तेमाल और कद्र न करने के कारण पतन की दिशा में चले गये हमें यह याद रखना चाहिए कि वक़्त की पाबन्दी के बिना न तो कोई संगठन कामयाब हो सकता है और ना ही कोई व्यक्ति।

यह दुआ का वक़्त है

मौलाना खुर्शीद आलम मदनी

इस्लाम धर्म में दुआ का बड़ा ऊंचा और भव्य स्थान है। यह महान उपासना और महान आज्ञापालन है। यह इबादतों की आत्मा और उसका मग्ज़ है, यह अल्लाह की तरफ से तोहफा है। यह मोमिन का बचाव और सुरक्षा करती है यह कठिनाइयों और परेशानियों से निजात का अचूक उपाय है यह अल्लाह तआला की रहमतों और बर्कतों से अपनी झोली भरने और मकसद को पा लेने का बेहतरीन माध्यम है।

एक मोमिन को जब कोई परेशानी, कठिनाई और आपदा होती है तो वह तुरन्त दुआ का उपाय करते हुए अल्लाह के दरबार में अपने हाथ उठा लेता है और अपना अनुरोध उसकी अदालत में पेश करते हुए अपना दुखड़ा बयान करता है।

यह विनम्रता के साथ वह दुआ है जो बन्दा अपने रब से करता है वह किसी वक़्त भी माँगे उसका दरवाज़ा कभी बन्द नहीं होता। उससे मांगने के लिये कोई वक़्त निर्धारित नहीं हैं। उससे जितना मांगो उतना ही वह खुश होता है और न मांगो तो वह नाराज़ होता है, इसलिये जब कोई मुश्किल पेश आए, कठिनाई में लिप्त हों तो उससे मांगें खूब मांगें, जी भर कर दुआएं करें, डायरेक्ट मांगें। याद रखें संसार की पूरी सृष्टि उसकी मोहताज है और वह किसी का मोहताज नहीं। उससे इस यक़ीन के साथ मांगें कि वह हमारी सुन रहा है और ज़रूर कुबल करे गा उससे मांगें तो पूरी एकाग्रता के साथ मांगें उन औक़ात में मांगें जिन में अल्लाह की रहमत और ज़्यादा विस्तार हो जाती है। उसकी कृपा और मेहरबानियों के दरवाज़े और ज़्यादा खुल जाते हैं स्वयं भी मांगें और अपने मां बाप को राज़ी करके उनसे दुआ का अनुरोध करें क्योंकि मां बाप की दुआएं औलाद के हक़ में कुबूल होती हैं।

आधी रात के बाद और फर्ज़ नमाज़ों के बाद मांगें, अज़ान और एक़ामत के दर्मियान मांगें, सफर के दौरान मांगें।

इस हक़ीक़त को जेहन में बिठा लें कि दुआ न करना और अल्लाह से न मांगना घमण्ड की निशानी है। जो बदकिस्मत इन्सान यह इबादत नहीं करता वह घमण्डी है और अपने कर्म से ज़ाहिर करता है कि वह दुआ के मामले में अपने पालनहार से बेपरवाह है। उसे समझना चाहिए कि वह जिस जात और हस्ती से बेपरवाही का प्रदर्शन कर रहा है अगर वह किसी से बेपरवाह हो जाए तो फिर दुनिया में कोई भी उसकी परवाह नहीं करता और आखिरत में अल्लाह से बेपरवाही के नतीजे में नाकामियां उसका मुक़द्दर बन जाएंगी।

कुछ ऐसे भी हैं जो कठिनाइयों और परेशानियों में अपने सृष्टा और स्वामी को छोड़ कर मजबूर व बेबस सृष्टि के सामने रोते गिड़गिड़ाते हैं। मुर्दों के आस्तानों के दरवाज़े खटखटाते हैं कि शायद हमारी फरियाद व पुकार को सुनकर हमारी मदद करें और हमें इस विपदा और परेशानी से छुटकारा दें।

जबकि कुरआन और हदीस में मुश्किलात और विपदा के वक्त घुटकारा व कामयाबी के लिये केवल अल्लाह से दुआएं करने का हुक्म दिया गया है उसी के सामने सर

सजदे में रख कर सिस्कियाँ भरें, पुकारें, वह अल्लाह आपके आँसुओं को मोती समझ कर चुन लेगा और मुसीबतों के दलदल से निकाल कर कामयाबी की मंज़िल तक पहुंचा देगा। वही हमारी बिगाड़ी बनाने वाला, गरीबों को देने वाला, संकट मोचक और ज़रूरत पूरी करने वाला है।

दुआ से संबन्धित इस आवश्यक भूमिका के बाप आइये देखें कि दुआ की क्या अहमियत है, कुरआन और हदीस में इसकी फज़ीलत, दुआ मांगने की प्ररेणा और उसके महा पुण्य किस अन्दाज़ से बयान किये गये हैं।

१. उसकी महानता एवं महत्ता के लिये यही काफी है कि अल्लाह तआला अपनी किताब पवित्र कुरआन को दुआ ही से शुरू किया है और दुआ ही पर खतम किया है जैसे कि पहली सूरत अलहम्दो यह सूरत एक महान उददेश्य की प्राप्ति की दुआ पर आधारित है और वह महान उददेश्य अल्लाह से सीधी एवं सत्य राह की तरफ मार्ग दर्शन का सवाल है ''इह दिनस सिरातल मुसतकीम'' अर्थात ''हमें सीधी राह पर चला'' सूरे फातिहा आयतः ६

इसी तरह कुरआन की अंतिम सूरत सूरतुन नास'' भी दुआ ही है। किस चीज़ की दुआ? बन्दा अल्लाह से यह दुआ मांगता है कि मैं खन्नास शैतान के बुरे वस्वसे से तेरी शरण मांगता हूं जो इन्सानों के दिलों में वस्वसे पैदा करता है ''मिन शर रिल वस्वासिल खन्नास अल्लजी युवस विसू फी सुदूरिन नास'' (सूरे नास, ५-४) अर्थात वस्वसा पैदा करने वाले छिप जाने वाले शैतान के शर से, जो लोगों के सीनों में वस्वसे पैदा करता है।

२. पवित्र कुरआन में दुआ को इबादत और दीन से उल्लिखित किया गया है जैसा कि इस आयत से इसकी पुष्टि होती है।

''और तुम्हारे रब ने कह दिया है, तुम मुझे पुकारो मैं तुम्हारी दुआएं कुबूल करूंगा बेशक जो लोग घमण्ड की वजह से मेरी इबादत नहीं करते वह जल्द ही अपमान व रूस्वाई के नरक में दाखिल होंगे।'' (सूरे गाफिर-६०)

और जैसा कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फरमायाः

''लोगो मैं तुम सब से जुदा होता हूं और उन पूज्यों से भी जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो और मैं अपने रब को पुकारूं गा, मुझे उम्मीद है कि मैं अपने रब को पुकार कर (उसकी रहमत) से वंचित नहीं रहूंगा'' (सूरे मरयम-४८)

इसी तरह दुआ को दीन कहे जाने की स्पष्ट दलील कुरआन की यह आयत है ''पस तुम लोग बन्दगी व दुआ को उसके लिये खालिस करके पुकारो'' (सूरे गाफिर-६५)

३. तमाम इबादतें दुआवों पर आधारित हैं मिसाल के तौर परः

नमाज, जिस का अर्थ दुआ ही है। शुरू से लेकर आखिर तक दुआ दी है। रोज़ा, जिसके बारे में मश्हूर हदीस है कि जब जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने यह दुआ की कि ''ऐसा शख्स जिसने रमज़ान को पाया और (अपने तौबा व इस्तेग़फार, दुआ व अज़कार के द्वारा) अपने गुनाहों को नहीं मआफ करवाया तो वह हलाक व बरबाद हो गया'' (तिर्मिज़ी-३५०५) इस दुआ पर हमारे नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने आमीन कही।

इस मुबारक महीने के आखिरी दस दिनों की ताक़ रातों में अल्लाह से दुआ मांगने के लिये हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक संक्षिप्त और व्यापक दुआ सिखाई है। ''ऐ अल्लाह तू बहुत मआफ करने वाला है, मआफी को पसन्द करता है इसलिये मुझे मआफ कर

दे'' (तिर्मिज़ी-३५१३)

जो लोग हज कर चुके हैं वह जानते हैं कि हज के लिये रवानगी से लेकर वापसी तक हाजी लगातार दुआ और अज़कार ही में व्यस्त रहता है।

४. अल्लाह तआला ने अपने बन्दे को दुआ पर उभारा है और इसे कुबूल करने का वादा किया है। यही वजह है कि तमाम पैगम्बर अलैहिमुस्सलाम और सहाबा किराम रज़ियल्लाहो अन्हुम ज़िन्दगी में पेश आने वाले तमाम हालात में अल्लाह से दुआएं माँगा करते थे और उनकी दुआएं कुरआन में मौजूद और सुरक्षित हैं। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया तुम लोग अपने रब को अत्यंत आजिजी व इनकिसारी (विनम्रता) और खामूशी के साथ पुकारो, बेशक वह हद से तजाउज़ (सीमा का उल्लंघन) करने वाले को पसन्द नहीं करता है'' (सूरे आराफ-५५)

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''और अल्लाह को भय और उम्मीद के साथ पुकारा करो, बेशक अल्लाह की रहमत नेकी करने वालों के क़रीब होती है'' (सूरे आराफ-५६)

इसी तरह अंबिया किराम अलैहुमुस्सलाम की तारीफ करते हुये अल्लाह तआला ने फरमायाः

''बेशक वह लोग भलाई के कामों की तरफ सबक़त करते थे और हमें उम्मीद व बीम (आशा) की हालत में पुकारते थे और हमारे लिये खुशूअ व खुजूअ एखतियार करते थे'' (सूरे अंबिया-९०)

और सहाबा किराम रज़ियल्लाहो अन्हुम की रातें कैसे बसर होती थीं, अर्श वाल (अल्लाह) ने गवाही दी है। ''रात में उनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं, अपने रब को उसके अज़ाब के डर से और उसकी जन्नत की लालच में पुकारते हैं और हमने उन्हें जो रोज़ी दी है, उसमें से खर्च करते हैं'' (सूरे सज़ा-१६)

गौर करें किस तरह अल्लाह अपने बन्दों को बड़े ही प्यारे अन्दाज़ में मग्फ़िरत (क्षमायाचना) की दुआ मांगने की तरफ बुला रहा है। हदीस कुदसी में है। ''ऐ मेरे बन्दे! बेशक तुम लोग रात व दिन गुनाह करते रहते हो और मैं तुम्हारे गुनाहों को मआफ कर देता हूं, इसलिये तुम लोग मुझ से माफी मांगो, मैं तुम्हारे गुनाहों को मआफ कर दूंगा।'' (सहीह मुस्लिमः२५७७)

५. दुआ के लिये कोई दिन, जगह या वक़्त खास नहीं है यह ऐसा अमल है जिसे हर वक़्त और हर क्षण करने की इज़ाज़त है जैसा कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र जीवनी के अध ययन से मालूम होता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी का कोई क्षण दुआ से खाली नहीं। सोते, वक़्त जागते वक़्त, खाने से पहने और बाद में, बाज़ार में दाखिल होते वक़्त सुबह शाम, चांद पर नज़र पड़ी, छींक आई, नया कपड़ा पहना। सम्माननीय पाठको! यह कोरोना का जो प्रकोप है अल्लाह का अज़ाब है। मानवीय इतिहास का भयावह हादसा है। इस वैश्विक महामारी से छुटकारा पाने और इसका असल और शाश्वत एलाज यह है कि अल्लाह के बन्दे खड़े हों, अल्लाह की तरफ रूजू हों, गुनाहों से दूरी बनाएं, खालिस तौबा करें और सच्चे दिल से विनम्रता के साथ दुआ करें याद रखें यह दुआ का वक्त है,

न जाने कोई आशूब तुम को आ घेरे

अजीब वक़्त है दस्ते दुआ दराज़ करो

उपासना और अल्लाह से भय

मौलाना अब्दुल मन्नान शिकरावी

अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुरआन में अपने आज्ञाकारी बन्दों की प्रशंसा एवं सराहना इन शब्दों में की है ''यक़ीनन जो लोग अपने रब की हैबत से डरते हैं और जो अपने रब की आयतों पर ईमान रखते हैं और जो अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करते और जो लोग देते हैं और जो कुछ देते हैं और उनके दिल कपकपाते हैं कि वह अपने रब की तरफ लौटने वाले हैं यही हैं जो जल्दी जल्दी भलाइयां हासिल कर रहे हैं और यही हैं जो उनकी तरफ छोड़ कर जाने वाले हैं''। (सूरे मूमिनून-५७-६१)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा फरमाती हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस आयत के बारे में पूछा कि क्या यह वही लोग हैं जो शराब पीते हैं, ज़िना करते हैं और चोरी करते हैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ऐ सिददीक़ (रज़ियल्लाहो अन्हो) की बेटी! ऐसा नहीं है बल्कि यह वह लोग हैं जो रोज़ा रखते हैं, नमाज़ पढ़ते हैं, सदक़ा करते हैं और जिन्हें डर लगा रहता है कि उनके यह कर्म क़ुबूल नहीं होंगे। यही लोग भलाई के कामों में आगे आगे रहते हैं। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, मुस्नद अहमद)

हमारे असूलाफ (पूर्वज) ऐसे थे वह आज्ञाकारी से अल्लाह की नज़दीकी हासिल करते थे और विभिन्न तरीक़ों से अल्लाह की नज़दीक और खुशी हासिल करने में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करते थे, गलती और कोताही हो जाने पर अपना निरीक्षण करते थे, साथ ही उन्हें यह डर भी सताता रहता था कि कहीं ऐसा न हो कि उनके आमाल क़ुबूल न हों।

अबू बक्र सिददीक रज़ियल्लाहो तआला अन्हो दुआ के वक़्त बहुत रोया करते थे और फरमाते थे ''रोओ और अगर रोना नहीं आ रहा हो तो रोने जैसी शक्ल बना लो'' और फरमातेः ''अल्लाह की क़सम मेरी इच्छा है कि मैं पेड़ होता जिसे खा लिया जाता और काट लिया जाता फिर (मरने के बाद) हिसाब किताब का झमेला ही नहीं रहता'' हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का यह हाल था कि जब सूरे तूर की तिलावत के वक़्त ''इन्ना अज़ाबा रब्बिका ल वाकिउन'' अर्थात ''यकीनन तुम्हारे रब का अज़ाब घटित होकर रहेगा'' पर पहुँचे तो रोने लगे और इतना रोये कि बीमार पड़ गये और उनकी इयादत के लिये लोग आने लगे। जब वह रात में इबादत करते वक़्त इस आयत पर पहुंचते तो भय में लिप्त हो जाते थे और कई कई दिन घर में रह जाने की वजह से लोग बीमार समझ कर हाल चाल मालूम करने के लिये आने लगते। बयान किया जाता है कि रोने की वजह से आंसुओं से हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के गालों पर दो काली लकीरें पड़ गई थीं। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने इनसे एक बार कहाः अल्लाह तआला ने आप के जरिए शहर आबाद कराये और दुनिया के एक बड़े खित्ते को फतेह कराया, आप फिर भी इतना डरते हैं। तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहो

अन्हो फरमातेः मैं तो केवल इतना चाहता हूं कि निजात हो जाए न सवाब मिले और न ही सज़ा का हक़दार बनूं''

हज़रत उसमान रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जब क़ब्र के पास खड़े होते तो रोते रोते आप की दाढ़ी भीग जाती और फरमाते अगर मुझे स्वर्ग और नरक के बीच खड़ा कर दिया जाएगा तो पता नहीं किस में डाले जाने का हुक्म दिया जाएगा। मुझे तो पसन्द है कि अंजाम तक पहुंचने से पहले ही मुझे राख बना दिया जाए''।

हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो का हाल भी कुछ ऐसे ही था वह बहुत रोते थे और अपने हिसाब किताब किये जाने पर बहुत भय खाते थे और दो चीज़ों से वह खास तौर पर डरते थे, लम्बी लमबी आरूजुओं से, दूसरे गलत इच्छाओं की पैरवी से। फरमाते थे लम्बी आरजू से इसलिये कि वह आखिरत को भुला देती है और गलत इच्छाओं से इसलिये कि वह हक़ को कुबूल करने में रूकावट बनती है।''

दिल के अन्दर ही अल्लाह का उपदेशक मौजूद होता है। हज़रत नवास बिन समआन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (पैगम्बर) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह ने सीधे रास्ते की मिसाल बयान की है कि एक सीधा रास्ता है, उसके दोनों तरफ दो दीवारें हैं जिन में कुछ दरवाज़े खुले हुए हैं और दरवाज़ों पर पर्दे लटके हुए हैं रास्ते के सिरे पर एक पुकारने वाला पुकारता है कि ऐ लोगो! तुम सब रास्ते पर सीधे-सीधे चलो, ढेढ़े मत हो जब तुम में से कोई इन दरवाज़ों में से कोई दरवाज़ा खोलना चाहता है तो रास्ते के ऊपर पुकारने वाला पुकारता है, तेरे लिये हिलाकत है, इसे मत खोलो क्योंकि अगर इसे खोलोगे तो तुम इसमें दाख़िल हो जाओगे। रास्ते का तात्पर्य इस्लाम, पर्दों का तात्पर्य अल्लाह की हदें, खुले हुए दरवाज़ों से मुराद (तात्पर्य) अल्लाह की हराम की हुई चीज़ें और ऊपर से पुकारने वाले का मतलब अल्लाह की तरफ से नसीहत करने वाला है जो हर मुसलमान के दिल में उपदेशक की हैसियत से मौजूद है। (मुसनद अहमद, मुस्तदरक हाकिम)

इसलिये ऐ मुसलमान! तू अल्लाह की तरफ से तैनात उपदेशक की बात क्यों नहीं मानता जो तेरे दिल में मौजूद है? तू अल्लाह की स्थापित हदों और उसकी हराम की हुई बातों की रिआयत क्यों नहीं करता? इस तरह तू अल्लाह के और अपने दुश्मन (शैतान) से बदला क्यों नहीं ले लेता? कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है :

''बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है, उसे तुम भी दुश्मन ही मानो। वह अपने (अनुयाइयों) के गुट को बुलाता है ताकि वह दोनों नरक वालों में हो'' (सूरे फातिर-६)

ख़ालिद बिन मअ्दान रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि हर बन्दे के चेहरे पर दो आखें हैं जिनसे वह दुनियावी चीज़ों को देखता है और दो आखें उसके दिल में होती हैं जिनसे वह आखिरत के मामलाता को देखता है तो जब अल्लाह तआला किसी बन्दे के साथ भलाई का एरादा करता है तो उसके दिल की आंखों को खोल देता है और वह इनके ज़रिऐ इन परोक्ष की चीज़ों को देख लेता है जिन का अल्लाह तआला ने वादा फरमाया है फिर उन्होंने कुरआन की इस आयत की तिलावत की ''क्या वह कुरआन में गौर व फिक्र नहीं करते या उनके दिलों पर ताले पड़े हुए हैं?'' (सूरे मुहम्मद-२४)

गाँव महल्ला में सुबह शाम पढ़ाने के लिये मकातिब क़ाइम कीजिए
मकातिब में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का आयोजन कीजिये

हज़रात! पवित्र कुरआन इन्सानों और जिन्नों के नाम अल्लाह का अंतिम सन्देश है जो आखिरी नबी पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ जो मार्गदर्शन का स्रोत, इबरत व उपदेश का माध्यम, दीन व शरीअत और तौहीद व रिसालत का प्रथम स्रोत है जिस का अक्षर-अक्षर ज्ञान और हिक्मत व उपदेश के मोतियों से परिपूर्ण है जिस का सीखना सिखाना, और तिलावत सवाब का काम और जिस पर अमल सफलता और दुनिया व आखिरत में कामयाबी का सबब और ज़मानत है और कौमों की इज़्ज़त व जिल्लत और उत्थान एवं पतन इसी से सशर्त है। यही वजह है कि मुसलमानों ने शुरूआत से ही इसकी तिलावत व क़िरत और इस पर अमल का विशेष एहतमाम किया। हिफ्ज व तजवीद और कुरआन की तफसीर के मकातिब व मदारिस काइम किए और समाज में इस की तालीम व पैरवी को विशेष रूप से रिवाज दिया जिस का परिणाम यह है कि वह कुरआन की बरकत से हर मैदान में ऊंचाइयों तक पहुंचे लेकिन बाद के दौर में यह उज्जवल रिवायत दिन बदिन कमजोर पड़ती गई स्वयं उप महाद्वीप में कुरआन की तालीम व तफसीर तो दूर की बात तजवीद व किरात का अर्से तक पूर्ण और मजबूत प्रबन्ध न हो सका और न इस पर विशेष ध्यान दिया गया जबकि कुरआन सीखने, सिखाने, कुरआन की तफसीर और उसमें गौर व फिक्र के साथ साथ तजवीद भी एक अहम उददेश था और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की बड़ी ताकीद भी फरमाई थी।

शुक्र का मकाम है कि चन्द दशकों पहले मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द सहित विभिन्न पहलुओं से शिक्षा जागरूकता अभियान के पिरणाम स्वरूप, मदर्सों, जामिआत, और मकातिब व मसाजिद में पवित्र कुरआन की तजवीद का मुबारक सिलसिला शुरू हुआ था जिस के देश व्यापी स्तर पर अच्छे परिणाम सामने आए। पूरे देश में मकातिब बड़े स्तर पर स्थापित हुए और बहुत सी बस्तियों में मकतब की तालीम के प्रभाव से बच्चों का मानसिक रूप से विकास होने लगा लेकिन रोज़ बरोज़ बदलते हालात के दृष्टिगत आधुनिक पाठशालाओं, कन्वेन्ट्स और गांव में मदारिस की वजह से मकातिब बहुत प्रभावित हुए इस लिये मकातिब को बड़े और अच्छे स्तर पर विकसित करने की ज़रूरत है ताकि नई पीढ़ी को दीन की बुनियादी बातों और पवित्र कुरआन से अवगत कराया जा सके।

इसलिये आप हज़रात से दर्दमन्दाना अपील है कि इस संबन्ध ा में विशेष ध्यान दें और अपने गांव महल्लों में सुबह व शाम पढ़ाने के लिये मकातिब की स्थापना को सुनिश्चित बनाएं। अगर काइम है तो उनकी सक्रियता में बेहतरी लाएं, प्राचीन व्यवस्था को अपडेट करें, इन में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का विशेष आयोजन करें ताकि जमाअत व मिल्लत की नई पीढ़ी को दीन व चरित्र से सुसज्जित करें और उन्हें दीन व अकीदे पर काइम रख सकें।

अल्लाह तआला हम सब को एक होकर दीन जमाअत व जमीअत और मुल्क व मिल्लत की निस्वार्थता सेवा करने की क्षमता दे, हर तरह के फितने और आजमाइश से सुरक्षित रखे और वैश्विक महामारी कोरोना से सबकी रक्षा करे। आमीन

अपील कर्ता

असगर अली इमाम महदी सलफी

अमीर, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द एवं अन्य जिम्मेदारान

नैतिक प्रशिक्षण

डा० मुक़्तदा हसन अज़हरी रह०

इस विषय से अभिप्राय वह सभी अच्छे कार्य हैं जिसका मनुष्य के चरित्र तथा व्यवहार से सम्बन्ध है तथा जिसका आदेश दिया गया है। चरित्र का इस्लाम में अत्याधिक महत्व है तथा मानव समाज का सुधार एवं हित, चरित्र पर ही निर्भर है। इसी शक्ति से मनुष्य एक दूसरे को प्रभावित करता है तथा जीवन को सुखमय बनाता है।

यदि मनुष्य के हृदय में ईमान की रोशनी तथा ईश्वर का भय है तो अवश्य ही उसका कार्य अच्छा तथा व्यवहार एवं चरित्र श्रेष्ठ होगा।

चरित्र के महत्व को दृष्टिगत रखते हुए इस्लाम ने चरित्र के प्रशिक्षण पर अधिक बल दिया है तथा दया एवं दान का सुझाव दिया है।

त्रिमिज़ी की एक हदीस में नबी स० का कथन है कि एक पिता का अपने पुत्र के लिए सबसे उत्तम उपहार, शिष्टाचार तथा अच्छा चरित्र एवं अच्छा व्यवहार है।

नैतिक प्रशिक्षण के विषय में माता-पिता तथा अभिभावकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। शरीअत (धर्म) की शिक्षाओं से मालूम होता है कि सन्तान के विषय में माता-पिता तथा अभिभावकों को निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है।

प्रारम्भ से ही बच्चों को सच्चाई, त्याग, बलिदान, दृढ़ता, बड़ों का सम्मान तथा दूसरों के साथ दया एवं कृपा भाव तथा कुशल व्यवहार का साधक बनाना चाहिए तथा सभी उन अच्छे कार्यों के करने का सुझाव दिया जाये जिससे दूसरों को सुख सुविधा प्राप्त हो।

इसी प्रकार बच्चों को निम्नलिखित चारित्रिक दोषों से दूर रखने का भरपूर प्रयास किया जाये।

१.झूठ

मनुष्य के स्वभाव के विपरीत तथा अत्याधिक बुरी आदत झूठ बोलना है। शरीअत ने इस सम्बन्धा में कड़ी चेतावनी दी है। झूठ एक प्रकार से झगड़े की जड़ है तथा इसकी गणना झगड़े की आदतों में की जाती है। झूठे व्यक्ति के विषय में हदीस में वर्णित है कि अल्लाह तआला क्यामत (प्रलय) के दिन झूठे व्यक्ति से न तो बात करेगा न उसे मुक्ति प्रदान करेगा और न ही उसकी ओर देखेगा। झूठे को बड़ी भयंकर यातना दी जायेगी।

सन्तान को इस बुरी आदत अर्थात झूठ के अति भयावह परिणामों से भली भांति सचेत कर देना चाहिए तथा उससे होने वाली हानियों की सविस्तार व्याख्या कर देनी चाहिए। इसी प्रकार यह भी आवश्यक है कि माता-पिता तथा अभिभावक बच्चों से झूठ न बोलें ताकि उनकी सन्तान झूठ से दूर रहे।

२. चोरी

चोरी करना अत्याधिक बुरी आदतों में से एक है तथा अच्छे चरित्र के विपरीत कार्य है। इससे मनुष्य में अन्य चारित्रिक दोष उत्पन्न होते हैं तथा इससे समाज को हानि उठाना पड़ता है। चोरी की बुरी आदतों से सन्तान को बचाना तथा दूर रखना अतिआवश्यक है। उनके दिल में अल्लाह का भय उत्पन्न

किया जाये, तथा मनुष्य की सम्पत्ति एवं धन दौलत का आदर स्पष्ट किया जाये और चोरी के भयंकर परिणामों को बता कर बच्चों के मन में चोरी से घृणा उत्पन्न की जाये।

३. बुरा भला कहना

किसी व्यक्ति को बुरा भला कहना तथा गाली देना चारित्रिक अवगुण एवं दोष तथा कमजोरी के लक्षण हैं। बाल्यावस्था में जब यह आदत पड़ जाती है तो बाद में इससे छुटकारा पाना कठिन हो जाता है। कभी-कभी मनुष्य बिना सोचे समझे ही मुंह से अपशब्द निकालने लगता है क्योंकि वह उसका आदी है।

बच्चे जो गाली या अपशब्द मुंह से निकालते हैं इसके सीखने या आदत पड़ने में सबसे बड़ा प्रभाव कुसंगति तथा दूषित समाज का है। जब बच्चा बड़ों को या साथियों को अपशब्द कहते सुनता है तो वह स्वयं भी वही मार्ग अपना लेता है।

इस्लाम ने जबान की सुरक्षा को अत्याधिक महत्व दिया है। अपशब्द बोलने पर नरक की सूचना दी गई है तथा साथ ही यह व्याख्या भी की गई है कि अपशब्द ईमान के विरूद्ध है। अतः माता-पिता तथा अभिभावकों का कर्तव्य है कि इस पहलू को साधारण समझ कर इसकी उपेक्षा न करें।

निर्लज्जता तथा आवारगी

इस्लाम में शिष्टाचार तथा संयमी जीवन का अधिक महत्व है। अच्छे चरित्र के लिए मनुष्य को शिष्टाचार का पालन आवश्यक है। वर्तमान समय में अनुशासनहीनता तथा अश्लीलता का ऐसा प्रत्यक्ष प्रदर्शन होता है कि बच्चा आरम्भ से ही अवज्ञा का शिकार हो जाता है तथा उसमें अनुशासन तथा शिष्टाचार का अभाव होता है।

अश्लील गीत, गाने, सिनेमा, टेलीविजन के उद्देश्यहीन कार्यक्रम तथा अश्लील साहित्य का समाज में बुराई फैलाने की भूमिका ज़्यादा है। इसलिए बच्चे को अवज्ञा तथा अव्यवहारिकता के इन साधनों से दूर रखना चाहिए कि वह अपना जीवन पवित्रता तथा शुद्धता के नियमों के अनुसार व्यतीत कर सके तथा मनोरंजन के बुरे ढंग को अपना कर अपना नैतिक जीवन नष्ट न करे।

सन्तान के प्रशिक्षण के विषय में घर का वातावरण, रेडियो, तथा टी०वी. का प्रभाव असाधरण है। बच्चा अपनी आंख से जो कुछ देखता तथा सुनता है उसी के अनुसार व्यवहार करता है। टी० वी० पर प्रस्तुत होने वाले पात्रों को वह देखता है, इसलिए बच्चों पर उसका प्रभाव स्थाई होता है। टी० वी० कार्यक्रम के लाभ-हानि पर चर्चा सविस्तार होनी चाहिए। यहां एक घटना के प्रकाश में कार्टूनी फिल्म से सम्बन्धित एक निवेदन है। इन फिल्मों को बच्चे बड़ी रूचि से देखते हैं तथा बड़ों की अपेक्षा शीघ्रता से उन्हें समझते हैं। घर के लोग बच्चों को व्यस्त देखकर सन्तुष्ट रहते हैं, परन्तु जब कोई अप्रिय घटना घटती है तब आंख खुलती है।

सऊदी अरब के जिद्दा नगर से प्रकाशित होने वाली अरबी साप्ताहिक पत्रिका अलमुस्लिमून के पत्रकार ने राजधानी रियाज़ में शाह खालिद अस्पताल के एक मरीज़ लड़के की घटना को लिखा है कि उस लड़के ने कार्टूनी फिल्म के एक दृश्य से प्रभावित होकर उसे नकल करना चाहा। इसके लिए कमरे में रखी बड़ी मेज़ पर चढ़ गया, फिर वहां से कुछ बोलते हुए अपने छोटे भाई के ऊपर कूद पड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि उसकी रीढ़ की हड्डी बुरी तरह प्रभावित हो गई। डाक्टरों के अनुसार

अब उसका ठीक प्रकार से चलना या खड़ा होना सम्भव नहीं।

३. शारीरिक प्रशिक्षण

इस्लाम ने जिस प्रकार मनुष्य के मस्तिष्क तथा आत्मा की शुद्धता एवं पवित्रता का आदेश दिया है, उसी प्रकार उसका ध्यान मनुष्य के शारीरिक स्वास्थ्य तथा शक्ति पर भी है। उसका उद्देश्य है कि मनुष्य का रूप रंग तथा शारीरिक स्वास्थ्य भी श्रेष्ठ हो। इसीलिए शरीअत में शारीरिक विकास तथा स्वास्थ्य की सुरक्षा के स्पष्ट आदेश हैं। बाल्यावस्था शरीर के विकास में अधिक महत्व रखता है। इसलिए माता-पिता तथा अभिभावकों का कर्तव्य है कि वे बच्चों को स्वास्थ्य रक्षा के नियमों से परिचित करायें तथा शरीर को हानि पहुंचाने वाली वस्तुओं से बचाव की शिक्षा तथा सुझाव दें, क्योंकि यदि बालक शारीरिक रूप से निर्बल तथा कमज़ोर होगा तो जीवन के संघर्ष में न तो अपने दायित्वों का निर्वाह कर सकेगा और न ही अपने कार्य तथा परिश्रम से समाज को कोई लाभ पहुंचा सकेगा। इसीलिए हदीस में नबी स० का कथन है कि निर्बल मुसलमान की अपेक्षा शक्तिशाली मुसलमान अच्छा है, और अल्लाह की दृष्टि में अधिक प्रिय है।

माता-पिता जिस प्रकार सन्तान के भोजन की व्यवस्था करते हैं, उसी प्रकार यह भी आवश्यक है कि उनके खाने, पीने, सोने, जागने तथा स्नान के कार्यों का भी देख-भाल करें, तथा स्वास्थ्य हेतु लाभदायक नियमों का पालक बनायें। संक्रामक रोगों से दूर रखें तथा बीमार होने पर उनका उचित उपचार करायें। ऐसे खेल-कूद तथा व्यायाम का अभ्यस्त बनायें जिससे स्वास्थ्य को लाभ हो तथा बच्चे में किसी प्रकार का नैतिक दोष एवं धार्मिक आदेशों के पालन में अनिच्छा उत्पन्न न हो।

नबी स० ने शारीरिक शक्तियों को नियंत्रित रखने तथा जीवन में काम आने वाले व्यायामों का सुझाव देते हुए तैराकी तथा घोड़े की सवारी आदि का आदेश दिया है।

ऐश व आराम में जीवन व्यतीत करने और शारीरिक श्रम न करने के कारण मनुष्य जीवन में आगे आने वाली कठिनाइयों का सामना नहीं कर सकता है, और न ही धर्म प्रचार व प्रसार के लिए कष्ट सहन कर सकता है। इसलिए माता-पिता को चाहिए कि हर प्रकार की सम्पन्नता होते हुए भी अपनी सन्तान को परिश्रमी एवं सहनशील बनाएं ताकि भविष्य में वह हर प्रकार की कठिनाइयों को झेल सकें।

६. मानसिक प्रशिक्षण

सोच-विचार (आत्म चिन्तन) मनुष्य का मुख्य गुण है, तथा इसी मानसिक चेतन द्वारा वह धर्म तथा संसार के भले-बुरे की परख करता है। इसीलिए इस्लाम ने यह शिक्षा दी है कि बच्चों का मानसिक प्रशिक्षण इस प्रकार किया जाये कि उसे धर्म की शिक्षा दी जाये, सभ्यता एवं संस्कृति के अर्थों को स्पष्ट किया जाये तथा शिक्षा एवं सभ्यता की सीमाओं को बताया जाये।

मानसिक प्रशिक्षण के लिए सबसे महत्वपूर्ण वस्तु शिक्षा है। इस्लाम ने शिक्षा पर अत्याधिक बल दिया है।

ईश्वर ने अंबिया कराम (रसूलों) को कौमों (राष्ट्रों) का शिक्षक बनाकर विश्व में भेजा था। इससे स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षा का क्या महत्व है। अंबिया कराम ने लोगों को बिना किसी मुआवज़ा के शिक्षा तथा प्रशिक्षण देकर यह उदाहरण प्रस्तुत किया कि किस प्रकार निःशुल्क शिक्षा होनी

चाहिए। परन्तु खेद है कि शुल्क शिक्षा को वर्तमान युग की ही विशेषता समझा जाता है।

सन्तान की शिक्षा के विषय में माता-पिता तथा शिक्षक को यह व्यवस्था करनी चाहिए कि सर्वप्रथम बच्चे को कुरआन की शिक्षा दें। उसके उपरान्त नबी स० की जीवनी बताएं तदोपरान्त अन्य धार्मिक तथा साहित्यिक शिक्षा दें। इस ढंग की शिक्षा से यह लाभ होगा कि बच्चे का जीवन इस्लामी सांचे में ढल जायेगा तथा दीन (धर्म) की शिक्षा पर व्यवहार करने की भावना उत्पन्न होगी।

शिक्षा के साथ ही बच्चों में मानसिक चेतना उत्पन्न करनी चाहिए, ताकि वे निम्नलिखित वास्तविकताओं से परिचित हो सकें।

इस्लाम एक पूर्ण जीवन व्यवस्था है।

कुरआन तथा नबी स० का आदर्श हमारा स्थाई धर्म विधान है।

इस्लामी इतिहास हमारी मूल्यवान निधि है।

इस्लामी सभ्यता तथा संस्कृति आत्मा तथा चेतना का नाम है।

हमारे पूर्वजों की सफलता का रहस्य इस्लामी शरीअत का पालन था।

मर्कज़ी जमीअत की प्रेस रिलीज़

सफरुल मुज़फ्फर 1443 हिजरी का चाँद नज़र का गया

दिल्ली ८ सितंबर २०२१

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली से जारी अखबारी बयान के अनुसार आज २९ मुहर्रमुल हराम १४४३ हिजरी अनुसार ८ सितम्बर २०२१ बुधवार मग्रिब की नमाज के बाद अहले हदीस मंज़िल उर्दू बाज़ार जामा मस्जिद दिल्ली में मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली की एक महत्वपूर्ण मीटिंग आयोजित हुई सफर महीने के चांद को देखने के सिलसिले में यथापूर्व देश के अधिकांश राज्यों के जिम्मेदारों से फून के माध्यम से संपर्क किये गये जिस से अनेक राज्यों से चांद देखने की प्रमाणित खबर मिली। इसलिये मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली ने यह फैसला लिया है कि दिनांक ९ सितम्बर २०२१ को सफरूल मुजफ्फर की पहली तारीख होगी। इन्शाअल्लाह

जमाअती खबर

मौलाना जकरिया फैज़ी प्रतापगढ़ी का निधनः यह जान कर अफसोस व गम दुआ कि झारखझड के बुजुर्ग आलिमे दीन प्रसिद्ध प्रचारक मुनाज़िर, अध्यापक, खतीब और मदर्सा इस्लामिया हाजी गली मधोपुर झारखण्ड के पूर्व प्रधानाचार्य मौलाना जकरिया फैजी प्रतापगढ़ी का ३० अगस्त २०२१ अनुसार २० मुहर्रमुल हराम को रांची के रीम्स हस्पताल में इन्तेक़ाल हो गया। आप ने अपने क्षेत्र में बड़ी सक्रियता के साथ दावत व प्रचार का कर्तव्य अंजाम दिया। इनका निधन ज्ञानात्मक और दावती दुनिया का बड़ा ख़सारा है उनकी तदफीन ३१ अगस्त को पनाह कोला कब्रस्तान देव घर झारखण्ड में अमल में आई। अल्लाह तआला मौलाना की मगफिरत फरमाए और पसमांदगान को सब्र की क्षमता दे। (शरीके गम व दुआ गोः- मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी)

बच्चों की शिक्षा एवं प्रशिक्षण पर ध्यान देने की ज़रूरत

मौलाना सईदुर्रहमान सनाबिली

महिलाएं चाहे जिस हैसियत में हों, इस्लाम धर्म ने उन्हें सम्मान एवं प्रतिष्ठा की निगाह से देखा है और उन्हें ऊंचा स्थान दिया है। माँ हो तो उसके कदमों के नीचे जन्नत, नेक बीवी हो तो दुनिया की सबसे कीमती चीज़, खाला (मौसी) हो तो इस्लाम ने खाला को मां का दर्जा और स्थान दिया है। अगर बेटी व बहन की हैसियत से हो और अगर हमने उन्हें सहीह तालीम व तर्बियत और (शिक्षा एवं प्रशिक्षण) से सुसज्जित किया तो वह हमारे लिये नरक से छुटकारा दिलाने का माध्यम और सबब हैं। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नारी के बारे में फरमायाः महिलाएं मर्दों के समान हैं। इसी तरह से महिलाओं के बारे में अल्लाह के पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अन्य उपदेश एवं शिक्षाएं भी इतनी स्पष्ट हैं कि इनके बाद महिलाओं की महानता एवं सम्मान के बारे में अधिकृति कुछ कहने की ज़रूरत बाक़ी नहीं रह जाती। हज्जतुल विदा के इतिहासिक अवसर पर पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने महिलाओं के बारे में फरमायाः सुनो उनका तुम पर हक़ यह है कि तुम उन्हें अच्छी तरह खाना खिलाओ और कपड़े उपलब्धा करो'' (हदीस का आंशिक भाग)

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस कथन पर गौर कीजिए कि इस्लाम धर्म ने महिलाओं के अधिकारों का किस हद तक पास व लिहाज़ रखने का आदेश दिया है। यही नहीं अल्लाह के प्यारे रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने व्यवहारिक तौर पर औरतों से अच्छा व्यवहार करके अपने अनुयाइयों के लिये आदर्श स्थापित किया है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ''तुम में से सबसे बेहतर वह है जो अपने परिवार वालों के लिये बेहतर हो और मैं अपने अपने परिवार वालों के लिये सबसे बेहतर हूं।

इस संक्षिप्त मगर आवश्यक भूमिका के बाद आप लोगों की सेवा में अर्ज़ करना चाहता हूं कि हमें अच्छी तरह मालूम है कि इस धरती पर पैदा किया जाने वाला हर इन्सान किसी न किसी चीज़ का जिम्मेदार है और हर इन्सान से उसकी जिम्मेदारी के बारे में पूछ ताछ होगी।

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना कि तुम में से हर कोई जिम्मेदार है और तुम से अपनी अपनी ज़िम्मेदारी के बारे में प्रश्न किया जाएगा, इमाम जिम्मेदार है और वह अपनी जिम्मेदारी के बारे में जवाबदेह है और आदमी अपने परिवार का संरक्षक है और उससे अपनी जिम्मेदारियों के बारे में सवाल होगा। औरत अपने पति के घर की जिम्मेदार है और उससे अपनी जिम्मेदारियों के बारे में सवाल किया जाएगा और सेवक अपने स्वामी के माल के बारे में जिम्मेदार और जवाबदेह है। (बुखारी, मुस्लिम)

इस हदीस के एतबार से जिस इन्सान का कार्यक्षेत्र जितना ज़्यादा विस्तार होगा उससे उसके अधीन मामलों के बारे में पूछताछ होगी और इस हदीस में साफ कहा गया है इन्सान अपने परिवार का जिम्मेदार

है और उनके बारे में उससे सवाल जवाब किया जाए गा। अल्लाह तआला क़ुरआन में हमें अपने परिवार वालों के बारे में हमारे फर्ज व दायित्व को याद दिलाते हुए कहता है ''हमें स्वयं भी नरक से बचना है और अपने परिवार को भी नरक की आग से बचाना है''

अगर हम ने इस संबन्ध में अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाई और मामूली कोताही भी की तो इसके बारे में परलय के दिन हम से पूछ ताछ हो गी और हमें वहां शर्मिंदगी का सामना करना होगा।

बेटियों बहनों की पैदाइश हमारे लिये रहमत है उनकी सहीह तालीम व तर्बियत पर पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें स्वर्ग की शुभ सूचना दी है लेकिन अगर हमने उन्हें नरक से बचाने का जतन नहीं किया, उनकी तालीम व तर्बियत में कोताही की, उन्हें इस्लामी शिक्षाओं से सुसज्जित नहीं किया तो यकीन जानिए फिर हमारे लिये यह कोताही घातक होगी और उनसे होने वाली खताओं के जिम्मेदार एवं साझीदार हम भी होंगे लेकिन अगर हमने उनकी सहीह ट्रेनिंग दी और इस्लामी शिक्षाओं से सुसज्जित किया तो फिर हमारे लिये मुबारकबाद और खुशखबरी है। जाबिर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

''जिस के तीन लड़कियां हों और वह उनको शिष्टाचार सिखाए और उनके साथ मेहरबानी का मामला और उनका भरण पोषण करे तो उसके लिये निश्चित तौर पर जन्नत वाजिब हो गई। पूछा गया कि ऐ अल्लाह के पैगम्बर अगर दो लड़कियां हों? तो आप ने फरमायाः और अगर दो हों तब भी। वहां मौजूद एक शख्स का कहना है कि अगर आप से एक लड़की के बारे में पूछा जाता तब भी आप यही जवाब देते।''

(मुसनद अहमद, शैख अलबानी रह० ने इसे सहीह करार दिया है)

इस हदीस पर ग़ौर करें कि इन्सान अपनी बहन बेटी को केवल अच्छे से अच्छा खिलाने पिलाने का ही ज़िम्मेदार नहीं बल्कि उसकी सबसे पहली ज़िम्मेदारी है कि वह अपनी बहन बेटियों की इस्लामी तालीमात के मुताबिक तर्बियत करे और इस्लामी आचरण व शिष्टाचार का पाबन्द बनाए तो ऐसी सूरत में वह स्वर्ग का पात्र होगा।

सहीह प्रशिक्षण और इस्लामी तालीमात से अज्ञानता का ही यह अंजाम है कि आज ऐसी शादियों का चलन बढ़ता जा रहा है जो हमारे धार्मिक सिद्धांतों और अक़ीदे के बिलकुल विपरीत हैं यह हमारे लिये चिंता जनक है इसके कई कारण हैं जिनका यहां संक्षिप्त में वर्णन किया जा रहा है।

पहला कारण इस्लामी तालीमात की रोशनी में प्रशिक्षण का अभाव। आज पूरी दुनिया में इस बात का शिक्वा है कि हमारे बच्चे नाफरमान हैं, मां बाप का सम्मान नहीं करते, लेकिन हम इसके कारण पर कभी गौर नहीं करते। औलाद के नाफरमान और अवज्ञाकारी होने का सबसे बड़ा सबब यह है कि हम लोग बच्चों के प्रशिक्षण में इस्लाम के सिद्धांतों और नियमों का ख्याल नहीं रखते।

अच्छी तर्बियत के लिये ज़रूरी है कि हमारे बच्चे किन की संगत में रहते हैं, किस के साथ उठते बैठते हैं, इन सभी पहलुओं पर निगाह रखें। अगर बच्चों को कम्पयूटर, लेपटाप दिया है तो देखते रहें कि बच्चे इनका प्रयोग कैसे और कहां करते रहते हैं कहीं ऐसा तो नहीं है कि इन इलेक्ट्रनिक आलात से अपना वक़्त और चरित्र बर्बाद कर रहे हैं अगर ऐसी बुराइयां मौजूद हैं तो इस पर कन्ट्रोल पाने की ज़रूरत है।

मुस्लिम बच्चों और बच्चियों का अपनी सभ्यता से फिर जाने का

एक अहम सबब यह है कि हम अपने बच्चों को बे बेपर्दगी के माहौल से नहीं बचाते जबकि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने औरतों को पर्दा की ताकीद की है और हिजाब में रहने को उनकी महानता व शान क़रार दिया है।

हमारे अन्दर सह शिक्षा का रूझान बढ़ने की वजह से समाजी बुराइयाँ जनम ले रही हैं जिस की वजह से सहीह व गलत का अन्तर करने में बेफिकरी और लापरवाही बढ़ती जा रही है इसलिये शिक्षा के लिये ऐसी संस्थाओं का चयन नहीं करना चाहिए जो अपनी सभ्यता से दूर हो जाने का सबब बन जाएं।

हमारे समाज में एक खराबी यह घर कर गई है कि मां बाप अपने बच्चों की शादी में कभी तालीम के नाम पर तो कभी अन्य चीज़ों का संदर्भ देकर देर करते हैं जबकि यह सरासर इस्लामी सिद्धांतों के खिलाफ है। इससे बहुत सी बुराइयाँ जनम लेती हैं।

इलेक्ट्रनिक डिवाइस मिसाल के तौर पर मोबाइल, कम्यपूटर, लेपटाप स्वयं हानिकारक नहीं हैं लेकिन जब इनका मनमाने ढंग से इस्तेमाल किया जाए तो हानिकारक हो जाता है। यह कुछ बड़े कारण हैं जिन की वजह से हमारे बच्चे इस्लामी तालीमात और अपनी सभ्यता से दूर हो रहे हैं और तरह तरह की अश्लीलता निर्लज्जता और गलत फहमियों में लिप्त होते चले जा रहे हैं। यही वजह है कि बच्चे अपनी सभ्यता से दूर हो कर अपने दीन व ईमान को बर्बाद कर रहे हैं। वक़्त रहते इन कारणों पर रोक लगाने की ज़रूरत है क्योंकि जब हम मर्ज का पता लगा ले गये तो एलाज मुश्किल नहीं है क्योंकि मर्ज खतरनाक ज़रूरत है लेकिन अभी नासूर नहीं बना है, इसके नासूर बन जाने से पहले इस पर कन्ट्रोल पाने की ज़रूरत है।

नौजवान नस्ल को बिगाड़ और अपनी सभ्यता से दूर होने का सबब मालूम होने के बाद अब सवाल यह पैदा होता है कि इन बुराइयों को कैसे कन्ट्रोल किया जा सकता है? अपनी औलाद की शिक्षा एवं प्रशिक्षण में जहाँ कहीं कोताही हुई है उसको दूर करने के लिये आज ही व्यवहारिक रूप से पहल करने की ज़रूरत क्योंकि जब हम अपनी नस्ल की तर्बियत इस्लामी तरीके के अनुसर करेंगे तो यकीनी तौर पर वह सहीह और गलत में अन्तर कर लेंगे और उन कामों से दूर रहेंगे जो उन्हें गलत राहों और दिशाओं पर पहुंचाते हैं।

अगर हम अपनी औलाद को अश्लीलता निर्लज्जता से बचाना चाहते हैं तो ज़रूरत है कि हम उन्हें अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम, सहाबा व सहाबियात रज़ियल्लाहो अन्हुम की ज़िन्दगी के उज्जवल इतिहास बताएं। मुस्लिम कम्यूनिटी की भी ज़िम्मेदारी है कि अपने बच्चों और बेटियों की धार्मिक व आधुनिक शिक्षा के लिये ऐसी संस्थाओं की स्थापना करें जहां पर्दे के साथ उन्हीं बेहतर से बेहतर शिक्षा ही जा सके। इसके अलावा घरों में भी इस्लामियात की तालीम का अच्छा एवं उचित प्रबन्ध किया जाए यकीन जानिये हमारे समाज से बुराईयां खतम हो जाएंगी और हमारी आने वाली पीढ़ी इस्लामी तालीमात को अपने जीवन का अनिवार्य हिस्सा बना लेगी।

कहा जाता है कि एक खराब मछली पूरे तालाब को गन्दा कर देती है इसी तरह से अगर आप की औलाद गलत संगत में पड़ गई तो फिर आप की मेहनत अकारत हो जाएगी। किसी इन्सान के बारे में मालूम करना हो तो उसके दोस्त के बारे में मालूम किया जाये यह कहावत हमें यह बताती है कि इन्सान की ज़िन्दगी में अच्छे दोस्तों की क्या अहमियत है और बुरे दोस्तों के क्या नुकसानात हैं। इस लिये बच्चों की अच्छी शिक्षा एवं प्रशिक्षण पर ज़्यादा से ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत है।

दहेज लेने और देने के हीले व बहाने और उसका अंजमाम

मौलाना अबू मुआविया शारिब सलफी

दहेज एक ऐसी रस्म है जिस की वजह से समाज के अन्दर शादी करना मुश्किल और अवैध संबन्ध बनाना आसान हो चुका है दहेज एक ऐसा डंक है जिसने पूरे समाज को डस लिया है मगर फिर भी हम इस अत्याचार को बरकरार रखने पर अडिग हैं और इसके बगैर शादी करने को अधूरा और अपनी शान के खिलाफ़ समझते हैं अफसोस कि जिसके नाजायज़ होने में कोई शक नहीं इसको लोगों ने तरह तरह के हीलों और बहानों से अपने लिये जायज़ कर लिया है जबकि कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया हैः

ऐ ईमान वालो! अपने आपस के माल नाजायज़ तरीक़े से न खाओ। (सूरे निसाा-२९)

जिन जिन हीलों और बहानों से इस गैर शरई काम को मुसलमानों ने अपने लिये हलाल कर लिया है इनमें से सबसे ज्यादा मश्हूर यह बात है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सैयदा फातिमा रज़ियल्लाहो अन्हा को दहेज़ दिया था इसी लिये दहेज का लेना और देना जायज़ है जबकि यह बात नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर बहुत बड़ा झूठा आरोप है क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सैयदा फातिमा रज़ियल्लाहो अन्हा को दहेज़ दिया ही नहीं था बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो कुछ भी दिया था वह सैयदा फातिमा के मुहर के पैसे ही से खरीदा था जैसा कि इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो अनहुमा बयान करते हैं कि सैयदना अली रज़ियल्लाहो अन्हो ने सैयदा फातिमा से निकाह किया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अली रज़ियल्लाहो अन्हो से कहा कि फातिमा रज़ियल्लाहो अन्हा को महर में कुछ दो तो अली रज़ियल्लाहो अन्हो ने कहा कि मेरे पास तो कुछ भी नहीं है फिर आप ने सैयदना अली रज़ियल्लाहो अन्हो से पूछा कि तुम्हारी हतमी ज़िरह कहाँ है? तो अली रज़ियल्लाहो अन्हो ने कहाः वह तो मेरे पास है। आप ने अली रज़ियल्लाहो अन्हो से कहा वही हतमी ज़िरह महर में फातिमा को दे दो। अली रज़ियल्लहो स्वयं कहते हैं कि मैंने यह ज़िरह फातिमा को महर के तौर पर दे दिया। (अबू दाऊद २१२५, नेसई, ३३७५, मुसनद अहमद ६०३)

जब अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने यह जिरह महर के तौर पर देने का एलान किया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको हुक्म दिया कि यह ज़िरह बेच दो फिर सैयदना अली रज़ियल्लाहो अन्हो ने अपना ज़िरह ४८० दिरहम में सैयदना उस्मान गनी रज़ियल्लाहो अन्हो के हाथों बेच दिया और हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने यह रक़म नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दे दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुछ रक़म बिलाल रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को देकर कहा कि इससे कुछ खुश्बू वगैरह खरीद कर ले आओ। फिर आप

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुछ सामान तैयार करने का हुक्म दिया जिसमें एक सफेद ऊनी चादर, चारपाई, दो मश्कीज़े, दो चक्कियाँ और अज़खुर घास से भरा हुआ चमड़े का तकिया था। (अल मवाहिबुद दुनिया बिल मिनहिल मुहम्मदिया १/३८४) पता चला कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो सामान खरीदा था वह सैयदना अली रज़ियल्लाहो अन्हो के ही पैसों से था इसलिये इससे दलील लेना सहीह नहीं और अगर मान लिया जाए कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी तरफ से खरीद करके उपर्युक्त सामान अपनी बेटी को दिया था तो भी इससे दहेज़ के जायज़ होने पर दलील लेना सहीह नहीं क्योंकि

सबसे पहली बात तो यह है कि इसे दहेज का नाम देना सहीह नहीं है कि क्योंकि अगर यह दहेज होता तो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी अन्य तीनों बेटियों को ज़रूर दहेज देते क्योंकि इसका सुबूत हदीसों की किसी किताब के अन्दर मौजूद नहीं जो इस बात की दलील है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फातिमा रज़ियल्लाहो अन्हा को जो कुछ भी दिया था वह दहेज नहीं था।

दूसरी बात यह है कि अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो शुरू से ही आप के भरण पोषण और संरक्षण में थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने संरक्षक के तौर पर उनकी शादी के अवसर पर उनके लिये इन्तेज़ाम करके दिया और ऐसा करने में कोई हर्ज नहीं और न ही इसे दहेज़ का नाम दिया जा सकता है।

तीसरी बात यह है कि अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की आर्थिक स्थिति खासी तन्ग थी इस लिये मदद के तौर पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उपर्युक्त सामान दिया था और ऐसा करने में भी कोई हर्ज नहीं है और इसे दहेज़ का नाम हर्गिज़ नहीं दिया जा सकता और न ही इससे दलील ली जा सकती है क्योंकि आज उसे ही ज़्यादा दहेज दिया जाता है जिसके पास पहले ही से ज़्यादा माल व दौलत होता है।

इस सिलसिले में चौथी और आखिरी बात यह है कि हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहो अन्हा को दिये गये सामान से वह मसला निकलता है जो आज के दहेज लेने वाले समझ रहे हैं तो इस पर अमल करने वाले सबसे पहले सहाबा किराम होते या फिर उम्महातुल मोमिनीन अपने साथ ज़रूर यह सब सामान लातीं या कम से कम सलफ से इसका सुबूत ज़रूर मिलता लेकिन ऐसा नहीं है जो इस बात का स्पष्ट सुबूत है कि दहेज का इस्लाम से कोई संबन्ध नहीं है।

दहेज लेने वालों ने एक बहाना यह भी गढ़ रखा है कि हमें लड़की वाले हंसी खुशी देते हैं जबकि ऐसा कहना शत प्रतिशत झूठ है। दहेज को तोहफे का नाम देना किसी भी हाल में सही नहीं है क्योंकिः

तोहफा खुशी से दिया जाता है।

तोहफा और उपहार अपनी ताक़त के मुताबिक दिया जाता है।

तोहफा देने में किसी का दबाव नहीं होता।

तोहफे को वरासत का बदल नहीं समझा जाता।

तोहफे के लिये बड़े बड़े कर्ज़ नहीं लिये जाते।

तोफा देने में फुजूल खर्ची से काम नहीं लिया जाता है।

आप उपर्युक्त बिन्दुओं पर गौर करें आप स्वयं इस नतीजे पर पहुंचेंगे कि दहेज के अन्दर यह सारी चीज़ें नहीं पायी जातीं जब

ऐसी स्थिति है तो दहेज़ को तोहफे का नाम कैसे दिया जा सकता है।

याद रखें यह सारी बातें निराधार और दूसरों के माल को नाजायज़ तरीक़े से हासिल करने के हीले और बहाने के सिवा कुछ नहीं क्यांकि शरीअत के आदेश और सिद्धांत वक़्त और हालात की मनुासिबत से बदलते नहीं हैं और न ही झूठे हीलों और बहानों से हराम चीज़ों को हलाल किया जा सकता है आज भी ऐसे लोग पाये जाते हैं जो न तो अपनी बेटी को दहेज देते हैं और न ही बेटे की शादी में दहेज़ लेते हैं। वास्तव में जिस इन्सान के दिल में अल्लाह का भय व डर होगा और उसे मरने के बाद के जीवन की चिंता हो गी तो वह इस तरह के हीले और बहाने नहीं करेगा इसलिये याद रखलें कि इस तरह के ओछे हीले और बहानों से दूसरों के माल को लेना जायज़ नहीं है।

जो लोग भी दहेज़ लेने और देने के लिये ऐड़ी चोटी का ज़ोर लगाते हैं एसे लोगों को अल्लाह से डरना चाहिए और अपनी आखिरत की चिंता करनी चाहिए क्योंकि जो लोग दहेज के नाम पर लड़की वालों से मांगते हैं, लाखों रूपये हासिल करते हैं क्यामत के दिन दहेज के नाम पर महिलाओं को प्रताड़ित करने वालों को अपनी निजात की चिंता करनी चाहिए क्योंकि ऐसे लोगों के जितने भी नेक कर्म हैं सबके सब अकारत हो जाएंगे, इन के नेक आमाल से दूसरों की निजात हो सकती है मगर ऐसे लोगों की नहीं बल्कि ऐसे लोग नरक के गडढ़े में फेंक दिए जाएंगे। जैसा कि सहीह मुस्लिम में है पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बार सहाबा किराम (अपने प्यारे साथियों) से पूछा कि क्या तुम जानते हो कि गरीब कौन है सहाबा ने जवाब दिया कि ऐ अल्लाह के संदेशवाहक हम तो मुफ्लिस (गरीब व कंगाल) उसे समझते हैं जिस के रुपये पैसे और सामान नहीं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः नहीं मेरी उम्मत का गरीब वह होगा जो क्यामत के दिन नमाज़ रोज़ा और ज़कात वगैरह का सवाब लेकर आयेगा मगर उसकी हालत यह होगी कि उसने किसी को गाली दी होगी, किसी पर झूठा आरोप लगाया हो गा किसी का माल (अवैध तरीके) से खाया होगा किसी का खून बहाया होगा किसी को मारा होगा। यह सभी (प्रताड़ित) लोग अल्लाह के पास अपनी फरयाद लेकर हाज़िर हो जायेंगे तो अल्लाह दुनिया के मजलूमों के हक़ में यह फैसला फरमायेगा कि इनकी नेकियों के ढेर से नेकियां उठा उठा कर दे दिया जाएगा। और हर एक को उसके अत्याचार के हिसाब से उसकी नेकियाँ मजलूमों को दे दी जाएंगी मगर अभी कुछ ही देर हुआ होगा कि उसकी तमाम नेकियाँ खत्म और मजलूम दावेदार बाकी रह जाएंगे फिर अल्लाह हुक्म देगा कि अब तो न्याय की एक ही सूरत है कि मजलूम के जो पाप हैं इस अत्याचारी के ऊपर डाल दिया जाए और इसे जहन्नम में फैंक दिया जाए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया इसके साथ ऐसा ही किया जाएगा और फिर इसे जहन्नम की आग में झोंक दिया जायेगा। (सहीह मुस्लिम २५८१ तिर्मिज़ी २४१८)

ज़रा सोचिये उनका क्या हाल होगा जो औरतों को दहेज के नाम पर प्रताड़ित करते हैं सुबह शाम लांछन करते हैं। अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमें शुद्धबुद्धि दे ताकि दहेज जैसी घातक और बुरी रस्म को छोड़ सकें। आमीन (जरीदा तर्जुमान अंक १-१५ सितंबर २०२१ में प्रकाशित लेख का सारांश)

कुरआन एक चमत्कार

प्रोफेसर डा० ज़ियाउर्रहमान आज़मी रह०

कुरआन अन्तिम ईश-ग्रन्थ है, जो अन्तिम नबी मुहम्मद पर तेईस वर्षों के अन्तराल में उतरा। सबसे पहले तो यह नबी स० के हृदय पर नक्श (अंकित) हो जाता था, फिर आप के बताने पर आपके साथी सहाबा याद कर लेते थे, और नबी स० ही की आज्ञा से इसको विभिन्न वस्तुओं पर लिख लिया जाता था। फिर जब अबू बक्र खलीफा बनाए गए तो उन्होंने विभिन्न चीज़ों पर लिखे हुए कुरआन के अंशों को इकटठा करवाया और एक ग्रन्थ की बहुत-सी प्रतियां बनवाईं और उन्हें पूरी इस्लामी दुनिया में भिजवा दिया। और आज तक उसी प्रति के अनुसार कुरआन प्रकाशित होता है। इस प्रकार अल्लाह तआला ने कियामत तक के लिए इसे परिवर्तित होने से बचा लिया और सुरक्षा की जिम्मेदारी लेते हुए फरमाया।

''निस्सन्देह कुरआन हमने ही उतारा है और निःसन्देह हम ही उसके रक्षक हैं'' (कुरआन, सूरा-१५, अल हिज्र आयत-९)

कुरआन अब संसार में एकमात्र ईश्वरीय ग्रन्थ है, जो अब तक सुरक्षित है और क़ियामत तक सुरक्षित रहेगा। इससे पूर्व जो ग्रन्थ उतरे थे, उनमें बहुत कुछ फेर-बदल हो चुके हैं।

कुरआन जब पहले-पहल लिखा गया तो उसमें मात्राएं (आराब) नहीं थीं। क्योंकि अरबी भाषियों को इसकी ज़रूरत नहीं थी। लेकिन जब इस्लाम अरब से निकलकर अजम तक फैल गया और अजमियों को मात्राओं के बिना कुरआन पढ़ने में कठिनाई होने लगी तो उस समय के खलीफा अब्दुल मलिक बिन मरवान जो सन ६५ हिजरी में खलीफा बने ने एक भाषाविद अबुल असवद दुवली जिनका देहान्त सन ६९ हिजरी में हुआ, को आदेश दिया कि वे कुरआन में मात्राएं लगा दें ताकि पढ़ने में गलतियां न हों। इस प्रकार अल्लाह ने कुरआन को गलत पढ़ने से भी बचा लिया। फिर जब प्रिंटिंग प्रेस आ गई तो कुरआन संसार के कोने कोने से प्रकाशित होने लगा। इस समय कुरआन का सबसे बड़ा प्रिंटिंग प्रेस मदीना सऊदी अरब में है। उसका नाम शाह फहद कुरआन प्रेस संस्थान है, जिसकी स्थापना ३० अक्तूबर १९८४ में हुई, जहां से सन २००० ई तक कुरआन की डेढ़ करोड़ से भी अधिक प्रतियां प्रकाशित हो चुकी थीं। इसी प्रकार उस संस्थान से सन १९९९ ई. निम्नलिखित २९ भाषाओं में कुरआन का अनुवाद प्रकाशित हो चुका था।

उर्दू, स्पेनिश, अलबीनी, इंडोनेशियाई, अंग्रेज़ी, अनको, उरामी, इगेरिया, बराहोइया, पश्तो, बंगाली, बर्गी, बुस्ती, तमिल, थाइलैंड, तुर्की, जूलो, सोमाली, चीनी, फारसी, फ्रांसीसी, काजाकी, कश्मीरी, कोरी, मक्दूनी, मलेबारी, होसा, पूरबा और यूनानी।

किसी धार्मिक ग्रन्थ के विषय में कोई राय बनाने तथा उसे स्वीकार करने से पहले यह देखना चाहिए कि वह स्वंय अपने विषय में क्या कहता हैं कुरआन अपने विषय में कहता है।

१. यह अल्लाह की ओर से उतारा गया है।

''ऐ नबी कहो यह कुरआन मेरी ओर वह्य किया गया है, ताकि मैं इसके द्वारा तुम्हें और जिस तक यह पहुंचे सबको सचेत करूं''।

(सूरा-६ अल अनआम आयत-१९)

''ऐ नबी हम ही ने अत्यंत व्यवस्थित ढंग से तुम पर कुरआन उतारा''। (सूरा-७६, अद दह्र, आयत-२३)

''क्या इन लोगों के लिए यह काफी नहीं है कि हमने तुम पर किताब उतारी, जो इन्हें पढ़कर सुनाई जाती है। निश्चय ही इसमें ईमानवालों के लिए दयालुता तथा अनुस्मृति है।'' (सूरा-२९, अल अनकबूत आयत-५१)

''यह किताब हमने तुम्हारी ओर सत्य के साथ उतारी है, अतः तुम अल्लाह ही की इबादत (उपासना) करो, धर्म को उसके लिए विशुद्ध करते हुए अर्थात उपासना में उसके साथ किसी को साझी न बनाओ।'' (सूरा-३९, अज़ जुमर आयत-२)

''इस कुरआन की तुम्हारी ओर प्रकाशना करके, इसके द्वारा हम तुम्हें एक बहुत ही अच्छा बयान सुनाते हैं, यद्यपि इससे पहले तुम बेखबर थे''। (सूरा-१२, यूसुफ आयत-३)

''हमने तुम्हें बार-बार दोहराने वाली सात आयतें तथा यह कुरआन दिया'' (सूरा-१५, अल हिज्र आतय-८७)

''तुमको कुरआन, जो तत्वदर्शी तथा ज्ञानवाला है, अल्लाह की ओर से दिया जा रहा है''। (सूरा-२७ अन नम्ल आयत-६)

इससे पता चलता है कि कुरआन अल्लाह की किताब है। इस समय संसार में कुरआन के अतिरिक्त कोई अन्य ग्रन्थ नहीं है जो स्पष्ट रूप से अल्लाह की किताब होने का दावा कर सके, बल्कि अल्लाह ने तो नबी स० को भी चेतावनी दी है कि अगर तुमको अपनी ओर से कोई बात कुरआन से संबद्ध करके कहने की कोशिश की होती तो हम तुम्हारा हाथ पकड़ लेते, और तुम्हारी गर्दन की रग काट देते। (सूरा-६९, अल हाक्का, आयत-४५)

इससे मालूम हुआ कि पूरा कुरआन अल्लाह की ही ओर से है। इसलिए एक स्थान पर तो कुरआन ने यह दाव भी किया कि नबी जो कुछ कहते हैं वह वह्य के द्वारा ही कहते हैं। (कुरआन सूरा-५३ अन नज्म आयत-३)

कुरआन एक चमत्कार

२. कुरआन एक ऐसा चमत्कारपूर्ण ग्रंथ है कि समस्त मनुष्य मिलकर भी वैसा ग्रन्थ नहीं ला सकते ''कह दो यदि मनुष्य और जिन्न इसके लिए इकटठा हो जाएं कि इस कुरआन जैसी कोई चीज़ लाएं तो वे इस जैसी कोई चीज़ न ला सकेंगे। चाहे वे परस्पर एक दूसरे के सहायक ही क्यों न बन जाएं '' (सूरा-१७, बनी इसराईल, आयत-८८)

कुरआन ने यह चैलेंज उन लोगों को किया था जो अपने आपको अरबी भाषा का महान विद्वान समझते थे। उनके मुक़ाबले में नबी अनपढ़ थे। फिर भी वे कहते थे कि यह सब मुहम्मद अपनी ओर से लाते हैं। इसपर कुरआन में यह चैलेंज किया गया कि तुम और जिन्न मिलकर भी क्या ऐसा कुरआन ला सकते हो? उत्तर यही रहा कि नहीं ला सकते। फिर कुरआन ने केवल दस सूरतें लाने के लिए चैलेंज किया।

''क्या वे कहते हैं, उसने इसे स्वयं गढ़ लिया है। कह दो, अच्छा तुम इस जैसी गढ़ी हुई दस सूरतें ले आओ, और अल्लाह के अतिरिक्त जिस किसी को चाहो बुला लो, यदि तुम सच्चे हो''। (सूरा-११, हूद, आयत-१३)

जब वे दस सूरतें लाने में भी असफल रहे तो फिर कुरआन ने केवल एक सूरा लाने का चैलेंज किया।

''यदि तुम उस चीज़ के विषय

में, जो हमने अपने बन्दे पर उतारी है, संदेह में हो तो उस जैसी एक सूरा लाकर दिखा दो, और अल्लाह के अतिरिक्त तुम जिसे चाहो अपनी सहायता के लिए बुला लो, यदि तुम सच्चे हो''। (सूरा-२, अल बकरा आयत-२३)

लेकिन वे इस चैलेंज का भी जवाब न दे सके। इससे कुरआन का महा चमत्कार होना और अल्लाह की ओर से वह्य होना भी, सिद्ध हो गया।

कुरआन की विशेषता

३. कुरआन में शिफा (आरोग्य) और रहमत व दयालुता है।

''हम जो कुरआन में उतारते हैं इसमें ईमान लाने वालों के लिए शिफा (आरोगय) और दयालुता है, और अत्याचारियों के लिए उसमें घाटा ही है।'' (सूरा-१७, बनी इसराईल आयत ८२)

अर्थात कुरआन हर प्रकार के मानसिक तथा शारीरिक रोगों से मुक्ति प्रदान करता है इसलिए आवश्यक है कि उस पर ईमान लाया जाए, हृदय में उसे बसाया जाए उसके अनुसार जीवन व्यतीत किया जाए। जो लोग उस पर ईमान नहीं लाते, बल्कि उसके ईश्वरीय होने को झुठलाते हैं ऐसे लोगों के लिए घाटा ही घाटा है, न तो वे संसार में उससे कोई लाभ उठा सकेंगे, न प्रलय के दिन। इस प्रकार इसके द्वारा वे न तो अपने हृदय का रोग दूर कर सकेंगे और न शरीर का। कुरआन में आया है।

''और जब कोई सूरा उतारी जाती है तो कुछ लोग यह पूछते हैं कि इस सूरा ने तुम में से किसके ईमान को बढ़ाया? तो जो लोग ईमान लाए इस सूरा ने उनके ईमान को बढ़ाया है और वे प्रसन्न हो उठे, और जिनके हृदयों में रोग है इस सूरा ने उनके रोग को और बढ़ा दिया और वह कुफ्र की अवस्था में ही मर गए''। (सूरा-६, अत तौबा आयतें १२४.१२५)

कुरआन की भाषा

कुरआन को अल्लाह ने अरबी भाषा में उतारा, क्योंकि यह जिसपर उतारा गया था वे अरबी भाषी थे। उनके प्रथम संबोधित भी अरबी भाषी लोग ही थे। इसलिए किसी और भाषा में यह उतरता तो उन लोगों को इसे समझने और स्वीकार करने में बड़ी कठिनाई होती। ''और इसी प्रकार ऐ नबी हमने तुम्हारी ओर अरबी में कुरआन वह्य किया''। (सूरा ४२ अश-शूरा आयत-७)

''यदि हम इसे गैर अरबी कुरआन बनाते तो वे लोग कहते, इसकी आयतें क्यों नहीं हमारी भाषा में खोल खोल कर बयान की गईं? यह क्या कि वाणी तो गैर अरबी है और व्यक्ति अरबी'' (सूरा-४१ हा मीम अस सजदा आयत-४४)

''यह वह पुस्तक है जिसकी आयतें खोल खोल कर बयान हुई हैं, अरबी कुरआन के रूप में उन लोगों के लिए है जो जानना चाहें''। (सूरा-४१ हा-मीम अस सजदा आयत ३)

''ऐ मुहम्मद हमने तो तुम्हें सारे ही मनुष्यों के लिए शुभ सूचना देने वाला तथा सचेत करने वाला बनाकर भेजा है, परन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं''। (सूरा-३४, सबा आयत-२८)पवित्र कुरआन शुभसूचना देने वाला उनके लिए है, जो इसके आदेशों का पालन करते हैं और सचेत करने वाला उनके लिए है जो इसे ठुकरा दें। यह कहना ठीक नहीं कि कुरआन में जेा कुछ आया है उससे मेरा क्या सम्बन्ध ये वे लोग हैं जो कुरआन की वास्तविक्ता को समझते नहीं बस इनके लिए परलोक में यातना ही यातना है। और ग्रहण करने वालों के लिए स्वर्ग और उसकी नेमतें। **(कुरआन की इन्साइक्लोपीडिया से)**

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के सहयोग से सूबाई जमीअत अहले हदीस महाराष्ट्रा के प्रतिनिधिमण्डल का सैलाब प्रभावित एलाकों का राहती दौरा और रिलीफ की तक़सीम

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की योज़ना और सहयोग से सूबाई जमीअत अहले हदीस हिन्द महाराष्ट्रा के सचिव मौलाना सरफराज़ अहमद असरी और उप सचिव इंजीनियर अज़ूमतुल्लाह वगैरह पर आधारित राहती प्रतिनिधिमण्डल ने २७ अगस्त २०२१ जुमा के दिन महाराष्ट्र के चन्द सैलाब ग्रस्त स्थानों का दौरा किया। जमाअती मित्रों से मुलाकात की और सैलाब से हुई तबाही का निरीक्षण किया। प्रतिनिधिमण्डल सबसे पहले मेरज पहुंचा जहाँ इरफान भाई निशानदार ने चन्द जमाअती मित्रों के साथ स्वागत किया इसके बाद जमाअती मित्रों से मुलाकातें हुईं। प्रतिनिधिमण्डल ने मेरज और आस पास के कई स्थानों में सैलाब से हुई तबाही व बर्बादी का जायज़ा लिया और वहाँ सैलाब प्रभावितों के बीच रिलीफ बांटा।

इसके बाद भाई इरफान साहब और जमील साहब सांगली के साथ यह डेलीगेशन कोलापुर पहुंचा जहां सूबाई जमीअत के सचिव मौलाना सरफराज़ असरी ने जुमा का खुतबा दिया। नमाज़ के बाद जमाअती मित्रों से विस्तृत वार्ता हुई और सचिव व उप सचिव महाराष्ट्रा ने जनता को नसीहत की और जमाअत व जमीअत से संबन्धित बहुत से मश्वरे दिये जिस पर जमाअती मित्रों ने अमल करने का वादा किया इसके बाद सैलाब प्रभावित में रिलीफ बांटा गया। लगभग शाम पांच बजे भाई इरफान निशानदार, भाई जमीर और जनाब अब्दुल अजीज़ मकानदार सदस्यगण सलाहकार समीति महाराष्ट्रा के साथ यह काफिला एचल करंजी पहुंचा जहाँ डेलीगेशन के सदस्यों ने जमाअत की एक बड़ी तादाद से मुलाकात और सलाह व मश्वरा किया। इसके बाद इमरान भाई और हाफिज़ इनायत साहब ने एचल करंजी में पहली अहले हदीस मस्जिद जो कि अभी निर्माणाधीन है का निरीक्षाण किया। सूबाई जमीअत महाराष्ट्रा के सचिव ने इस अवसर पर लोगों से मस्जिद के लिये सहयोग की अपील की।

स्पष्ट रहे कि मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के कोषाध्यक्ष और सूबाई जमीअत महाराष्ट्रा के कार्यवाहक अमीर हाजी वकील परवेज़ की अगुवाई में यह राहती डेलीगेशन रवाना होना तय पाया था और सूबाई जमीअत अहले हदीस महाराष्ट्रा के खाज़िन जनाब हनीफ इनआमदार भी डेलीगेशन में शामिल थे। यह दोनों प्रतिष्ठित जिम्मेदारान रवानगी के लिये तैयार भी थे लेकिन कुछ कारणों से प्रतिनिधिमण्डल में शामिल न होसके लेकिन हाजी वकील परवेज साहब ने इस राहती प्रतिनिधिमण्डल को अपने साथियों के साथ बड़े एहतमाम से रवाना किया। और इस दौरान प्रतिनिधिमण्डल और संबन्धित एलाकों के जिम्मेदारों से बराबर संपर्क में रहे और जनाब हनीफ इनामदार साहब भी स्थिति मालूम करते रहे। अल्लाह इन दोनों हज़रात को अच्छा बदला दे।

रिलीफ की तकसीम और मैदानी दौरे और जायज़े पर आधारित विस्तृत रिपोर्ट मर्कज़ को भेजी जा रही है।

(मौलाना सरफराज़ अहमद असरी, सचिव सूबाई जमीअत अहले हदीस महाराष्ट्रा)

देश के विभिन्न स्थानों में सैलाब से जानी व माली नुक़सानात पर रंज व ग़म का इज़हार और सहयोग की अपील.

देश के विभिन्न स्थानों विशेष रूप से महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, पश्चिम बंगाल, बिहार और यूपी आदि के बाज़ ज़िलों में गैर मामूली बारिश की वजह से सैलाब की खराब स्थिति और इसके परिणाम में होने वाले भारी जानी व माली नुकसानात सख्त रंज व गम का कारण हैं और इस मुसीबत की घड़ी में आप सब ही से इन्सानियत के नाते सहयोग की अपील है।

मुसीबत ग्रस्त एलाकों में सैलाब के कारण तबाही बढ़ती जा रही है इसलिये प्रभावित लोग सब्र और संयम का दामन थामे रहें और आपसी भाई चारा और आपसी सहयोग का विशेष ख्याल रखें। इसके अलावा राष्ट्र व समुदाय के शुभचिंतकों से बिना धर्म के अन्तर के अपील की जाती है कि वह मुसीबत की इस घड़ी में मानवता के रिश्ते को निभाते हुए अपने भाइयों की भरपूर मदद करें। इसी तरह राज्य एवं केन्द्र सरकारों से मांग की जाती है कि प्रभावितों को राहत पहुंचाने, पुनर्वास और नुकसानात के मुआवजे के सिलसिले में उचित इकदामात करें। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की योजना, व्यवस्था और सहयोग से सूबाई जमीअत अहले हदीस महाराष्ट्रा का एक प्रतिनिधिमण्डल सैलाब प्रभावित एलाकों में रिलीफ का काम करके वास लौटा है और अपनी जायजा रिपोर्ट में वहाँ और ज़्यादा सहयोग की सिफारिश की है सूबाई जमीअत अहले हदीस महाराष्ट्रा के सचिव मौलाना सरफराज़ अहमद असरी और उप सचिव इंजीनियर अजमतुल्लाह साहब आदि पर आधारित यह सुबाई प्रनिनिधिमण्डल जिसे मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के कोषाध्यक्ष और सूबाई जमीअत महाराष्ट्रा के कार्यवाहक अमीर हाजी वकील परवेज की अगुवाई में रवाना होना था और जिसके एक सदस्य जनाब हनीफ इनआमदार साहब खाज़िन सूबाई जमीअत महाराष्ट्रा भी थे और यह दोनों प्रतिष्ठित ज़िम्मेदारान रवानगी के लिये तैयार भी थे लेकिन चन्द कारणों की वजह से प्रतिनिधिमण्डल में शामिल न हो सके लेकिन फिर भी हाजी वकील परवेज साहब ने अपने साथियों के साथ बड़े एहतमाम से प्रतिनिधिमण्डल को रवाना किया और इस दौरान हाजी वकील परवेज़ साहब जनाब हनीफ इनआमदार साहब प्रतिनिधिमण्डल और संबन्धित जगहों के पदधारियों से बराबर संपर्क में रहे। अल्लाह तआला इन सभी हज़रात को अच्छा बदला दे।

मर्कज़ी जमीअत ने मुसीबत की इस घड़ी में प्रभावितों के लिये दुआ और तमाम भाइयों विशेष रूप से अपनी तमाम राज्य इकाइयों के पदधारियों से उनकी मदद के लिये अपने अपने राज्यों से भपरूर सहयोग की अपील की है। निःसन्देह इतने बड़े पैमाने पर जान व माल की तबाही व बर्बादी प्राकृतिक व्यवस्था का भाग है और इस तरह की प्राकृतिक आपदाएँ ज़मीन पर बसने वाले हम इन्सानों के पापों के साधारण हो जाने की वजह से भी आती हैं और इस तरह अल्लाह तआला सँभलने के लिये कभी कभी अपनी निशानियाँ ज़ाहिर करता है और अपने बाज़ बन्दों को आज़माता है इस लिये इस से बन्दों को पाठ हासिल करना चाहिए और सब्र एवं आत्मनिरीक्षण से काम लेना चाहिए और विश्व स्तर पर जहाँ भी लोग तरह-तरह की परेशानियों में लिप्त हैं सबके लिये अल्लाह से आफियत की दुआ करनी चाहिए और सहयोग में जहाँ तक संभव हो हिस्सा लेना चाहिए। अल्लाह तआला प्रभावितों की विशेष मदद फरमाए और हम सबको हर तरह की मुसीबतों व बीमारियों से सुरक्षित रखे और भलाई के कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने की क्षमता दे। आमीन

अपील कर्ताः- **असगर अली इमाम महदी सलफी**

अध्यक्ष मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द व अन्य जिम्मेदारान व सदस्यगण

चेक/डराफ्ट इन नामों से बनायें।

Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind
A/c: 629201058685
ICICI Bank (Chandni Chowk Branch)
RTGS/NEFT IFSC Code-ICIC0006292

Ahle Hadees Relief Fund
A/c No. 200110100007015
Bombay Mercantile Cooperative Bank LTD
IFSC Code: BMCB0000044
Branch: Darya Ganj, New Delhi